भारतीय चीनी बढ़ाएगी एशियाई देशों की मिठास, अन्य उत्पादक संकट में

चीनी निर्यात की बढ़ी संभावना, गन्ना किसानों व घरेलू चीनी उद्योग के लिए बड़ा मौका

सुरेंद्र प्रसाद सिंह ● नई दिल्ली

वैश्विक बाजार में चीनी की मांग के मद्देनजर निर्यात की संभावनाएं बढ़ गई हैं। एशियाई देशों में चीनी की मांग को पूरा करने के लिए भारतीय मिलों की चीनी ही सबसे सस्ती पड़ेगी। चीनी के प्रमुख उत्पादक देशों में गन्ने की खराब हुई फसल और चीनी उत्पादन में संभावित कमी को देखते हुए बाजार में तेजी का रुख बनने लगा है। इससे चालू पेराई सीजन (2021-22) के दौरान गन्ना किसानों और घरेलू चीनी उद्योग के दिन बहुरने वाले हैं।

अंतरराष्ट्रीय चीनी बाजार में ब्राजील को चालू सीजन में धक्का लगेगा। महंगे तेल की वजह से वहां से होने वाली ढुलाई का खर्च बढ़ने से चीनी के महंगा होने का खतरा है। इसी वजह से एशियाई देशों में ब्राजील की मिलों की चीनी के पहुंचने की संभावना कम हो गई है। दरअसल तेल के मूल्य में तेजी के मद्देनजर जहां एक ओर चीनी की ढुलाई महंगी पड़ेगी, वहीं ब्राजील चीनी की जगह एथनाल उत्पादन पर ज्यादा जोर दे सकता है। इस संभावना का लाभ उठाने के लिए घरेलू चीनी उद्योग ने तैयारियां शुरू कर दी हैं।

अंतरराष्ट्रीय चीनी बाजार की स्थितियों पर आयोजित वर्चुअल सम्मेलन में चीनी के वैश्विक स्टाक, चीनी के उत्पादन-आपूर्ति और वैश्विक जिंस बाजार की ताजा स्थितियों पर विस्तार से चर्चा हुई। सम्मेलन में इस दौरान बताया गया कि ब्राजील ने तेल के बढ़ते मूल्य को देखते हुए एथनाल उत्पादन पर जोर दिया है, जिससे वहां चीनी का उत्पादन कम होगा। लिहाजा भारतीय चीनी निर्यातकों के लिए रास्ता और आसान हो जाएगा।

इंडियन शुगर मिल्स एसोसिएशन (इस्मा) के महानिदेशक अविनाश वर्मा ने स्पष्ट किया कि इसके लिए वैश्विक बाजार में हमे अपनी पोजीशन लेनी होगी, जिससे घरेलू चीनी उद्योग को निर्यात का लाभ प्राप्त हो सके। भारत में फिलहाल 85 लाख टन चीनी का पिछला स्टाक पड़ा हुआ है, जो सामान्य से 25 लाख टन अधिक है। चालू सीजन की पेराई नवंबर से तेज हो जाएगी और उत्पादन बढ़ेगा। लिहाजा अनुमान है कि मार्च, 2022 तक कुल 50 से 60 लाख टन चीनी का निर्यात हो जाएगा। अच्छे मानसून और जल उपलब्धता के चलते जहां चार फीसद रकबा बढ़ा है वहीं चीनी की उत्पादकता में एक फीसद की अतिरिक्त वृद्धि का अनुमान है।

इन बाजारों में बढ़ेगी पहुंच

एशिया में भारत के बाद थाइलैंड बड़ा चीनी उत्पादक है, जो इंडोनेशिया के बाजार को प्रभावित करता है। लेकिन थाइलैंड में लगातार दो वर्षों के सूखे ने चीनी उद्योग की हालत खराब कर रखी है। इसलिए वहां भी भारत से चीनी निर्यात की संभावना बनी हुई है। पड़ोसी देश होने के बावजूद बांग्लादेश ब्राजील से चीनी आयात करता रहा है। लेकिन इस बार उसे

भी भारत से चीनी आयात करनी पड़ सकती है। वहां चीनी की घरेलू खपत 23 लाख टन है। मलेशिया में 18 लाख टन चीनी की घरेलू खपत है, जिसे आयात से पूरा किया जाता है।